आंतरिक सार्म्थय को गुफाओं की जरूरी नहीं - स्वामी चक्रपाणि

माउंट आबू, 1 अगस्त। अखिल भारतीय हिन्दू महासभा अध्यक्ष स्वामी चक्रपाणि ने कहा कि नकारात्मक वृति वाले समाजकंटक राजयोग की शिक्षाओं का अनुसरण कर लें तो वे परिवर्तित होकर अपनी ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण में लगाने को प्रेरित हो जाएंगे। यह बात उन्होंने सोमवार देर शाम ब्रह्माकुमारी संगठन के ज्ञान सरोवर में धार्मिक प्रभाग की ओर से आंतरिक सार्म्थय के लिए जनजागृति विषय पर आयोजित चार दिवसीय सम्मेलन के उदघाटन सत्र में कही।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन ने यह सिद्ध कर दिया है कि परमात्मा शक्ति से आंतरिक सार्म्थ्य प्राप्त करने को जंगल की गुफाओं या कंदराओं में तपस्या करने की जरूरत नहीं बल्कि गृहस्थ परिवार में रहकर कर्म करते राजयोग के जरिए अपनी सुषुप्त शक्तियों को जागृत कर समाज कल्याण में उनका सदुपयोग किया जा सकता है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि स्व का बोध न होने से हर मानव दुःख अशांति के पाश में बंधा हुआ है। मैं व मेरा के यथार्थ ज्ञान के अभाव में असमंजस की स्थिति में मनुष्य तन का आधार लेने वाली आत्मा स्वयं को विनाशी देह मान बैठी है। कर्मेन्द्रियों की अधीनता से मुक्त होने को स्वयं को शरीर से अलग चेतन शक्ति आत्मा समझने का नियमित अभ्यास करने की जरूरत है।

श्रीराम जन्मभूमि निर्माण न्यास अयोध्या अध्यक्ष रसिक पीठाधीश्वर मं. जन्मेजयशरण महाराज ने कहा कि पवित्र संग मिलने की मंशा रखने वाले प्रभू प्रेमी ही दूसरों के जीवन को भी सुख शान्ति का मार्ग दिखा सकते हैं। संतों के संतत्व, वीरों के वीरत्व से ही संसार कुछ हद तक नैतिक पतन से रूका हुआ है।

बड़ौदा आर्ट ऑफ लिविंग गुरुदेव अतीत भाई ने कहा कि पवित्र संग व पवित्र स्थान का सानिध्य प्राप्त करने वाले ही भाग्यशाली होते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्थान पिछले 75 वर्षो से अनवरत रूप से जन-जन की अध्यात्मिक चेतना को जागृत करने की महान सेवा कर रहा है। पूरी दुनिया में महिलाओं के सशक्तिकरण का अदुभत कार्य और किसी ने नहीं किया है। समय की मांग है कि हम सभी धर्म, पंथ, जाति, साधना पद्धति व विभिन्न मान्यताओं को दरकिनार करते हुए एकजुट होकर आध्यात्मिक सशक्तिकरण का प्रयास करें। सुषुप्त चेतना को जागृत करने के लिए संगठित होना होगा। आंतरिक सामर्थ्य धन या पद से प्राप्त नहीं हो सकता उसके लिए साधना आवश्यक है। सत्य ज्ञान का प्रकाश, प्रेम का प्रकाश प्राप्त होने से ही मंजिल को प्राप्त करेंगे।

भन्ते करूणाकर महाथेरा, महासचिव बौद्ध धर्म फरूखाबाद दिल्ली ने कहा कि 38 साल में पहली बार मैं किसी संस्था के मंच पर उपस्थित हुआ हूं। यह वह स्थान है जहां केरल के पदमनाभम मंदिर से मिले खजाने से भी अधिक कीमती ज्ञान का खजाना उपलब्ध है। इस सत्य ज्ञान के खजाने से आत्माएं पवित्र बनती हैं। ब्रह्मा बाबा महान विभूति थे जिन्होंने अपना सब कुछ मानवता की सेवा के लिए अर्पित कर दिया। उनकी दृढ़ता व साहस सराहनीय है। संसार में अनेक प्रकार के हथियार निर्मित किए गए हैं लेकिन आत्मा को पवित्र बनाने का हथियार केवल ब्रह्माबाबा ने ही बनाया है। इस संस्था ने माताओं-बहनों को आगे बढ़ाकर सामाजिक परिवर्तन के साथ आध्यात्मिक परिवर्तन को भी नई दिशा दी है। यह सोचनीय विषय है कि जब देह ही मेरी नहीं तो परिवार, धन, संपति या संबंधी भी मेरे कैसे हो सकते हैं।

फतेहपुर से आए स्वामी विज्ञानानन्द ने कहा कि अंतर्यात्रा की ओर कदम बढ़ाने से ही आत्मा का दैवीय सार्म्थय जागृत होगा। धार्मिक सेवा प्रभाग राष्ट्रीय संयोजिक बी. के. मनोरमा बहन ने चार दिवसीय सम्मेलन का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए राजयोग का अभ्यास कराया। राजयोग प्रशिक्षिका बी. के. ऊषा बहन ने कुशलतापूर्वक मंच का संचालन किया। इससे पूर्व विधिविधानपूर्वक दीप प्रज्जवलित कर अतिथिगणों ने सम्मेलन का उदघाटन किया।